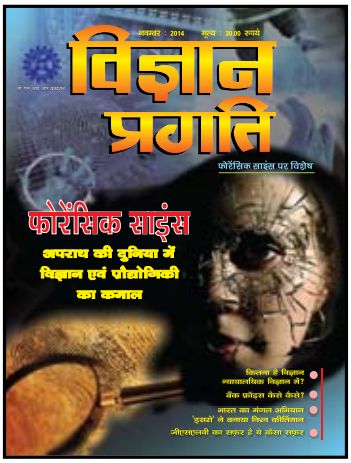

## न्याय में विज्ञान

नवम्बर 2014 का अंक फोरेंसिक साइंस पर आधारित रहा। मैं स्वयं एम.एससी. फोरेंसिक साइंस का छात्र हूँ अतएव यह अंक मेरे लिये बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है। फोरेंसिक साइंस शब्द भारत के लगभग पचास प्रतिशत लोगों के लिये आज की तारीख में अनजान है। इस कमी को महसूस करते हुए लेखिका ने विज्ञान प्रगति के माध्यम से बहुत ही सरल भाषा में फोरेंसिक साइंस का वर्णन किया है। विज्ञान का उपयोग हमेशा से ही समाज के कल्याण और विकास में होता रहा है। इसके दो पहलू उभरकर सामने आये हैं - वरदान और अभिशाप। उदाहरणार्थ-परमाणु ऊर्जा की बात करें तो इससे विद्युत ऊर्जा उत्पन्न की जा रही है वहीं दूसरी ओर इसी परमाणु ऊर्जा से परमाणु बम जैसी विनाशक शक्ति भी बन चुकी है जिसका उदाहरण हम द्वितीय विश्व युद्ध में देख चुके हैं।

वर्तमान में अगर हम अपराध नियंत्रण की बात करें तो ज्ञात होता है कि स्थिति बहुत भयावह है। अपराध, अपराधी और अपराध करने के तरीके बहुत जटिल हो चुके हैं। इन पर नियंत्रण के लिये समस्त विज्ञानों की तकनीकों का समावेश कर एक नये विज्ञान का निर्माण किया गया जिसे फोरेंसिक साइंस कहते हैं। आज वैश्विक स्तर पर फोरेंसिक साइंस काफी आगे पहुंच चुका है लेकिन भारत में अभी फोरेंसिक साइंस प्रारम्भिक स्तर पर ही है और भारत के प्रत्येक जनमानस तक इसका महत्व साझा करने हेतु 'विज्ञान प्रगति' एक अहम माध्यम सिद्ध होगा। आज भी फोरेंसिक साइंस के कुछ पहलू ऐसे भी हैं जिन्हें भारतीय कानून मान्यता प्रदान नहीं करता लेकिन आगे भविष्य में नियम व पहलू मान्य होंगे, ऐसी उम्मीद रखता हूँ।

अन्त में मैं विज्ञान प्रगति के सम्पादक सहित समस्त टीम को एक सुन्दर भविष्य की कल्पना करते हुए शुभकामनाएं देता हूँ कि आगे भी वे विज्ञानजनों के लेख प्रकाशित कर विद्यार्थियों और विज्ञान प्रगति के पाठकों को नई जानकारियां मुहैया करायेंगे।

**श्री मुरली मनोहर यादव, सुपुत्र श्री डा. हरनारायण सिंह यादव, पेट्रोल पम्प के पास, गुरसराय रोड, कस्बा-मोठ, जिला-झांसी 284303 (उ.प्र.)**
**[मो. : 08004099354;**
**ई-मेल : murlimanohary@gmail.com]**

## वास्तविक ज्ञान

विज्ञान प्रगति का नवम्बर 2014 का फोरेंसिक साइंस पर विशेषांक प्राप्त हुआ जो ज्ञानवर्द्धक के साथ-साथ उत्साह, उमंग एवं उल्लास पूर्ण लेखों से परिपूर्ण है। निधि दुबे जी ने अपने लेख में, किस तरह फोरेंसिक साइंस के आधार पर ये साक्ष्य जुटाये जाते हैं तथा एक दुर्दान्त अपराधी को सजा भी हो जाती है जिसके खिलाफ कई इंसान गवाही साक्ष्य देने से इंकार कर देते हैं, का बहुत अच्छा वर्णन किया गया है। शुकदेव प्रसाद जी का लेख 'जीएसएलवी का सफर है ये कैसा सफर' तथा पत्रिका के अन्त में के.पी. सिंह साहब के इंटरनेट सोशल-नेटवर्किंग पर आधारित 212 प्रश्न उत्तर प्रशंसनीय एवं समान्य ज्ञान से परिपूर्ण हैं। विज्ञान प्रगति के लेख यही कहते हैं कि .....

काम ऐसा कीजिए कि पहचान बन जाये
कदम ऐसा बढ़ाइये कि निशान बन जाये
यूं तो लेख बहुत छपते हैं पत्रिकाओं में
ऐसा लेख पढ़ें कि मिसाल बन जाये।

जिस प्रकार भोर की पहली किरण के आत्मसात से हंसता हुआ कमल खिल उठता है और कुछ भौरे गुनगुनाने लगते हैं उसी प्रकार विज्ञान प्रगति के लेखों के अध्ययन से मस्तिष्क रूपी कमल खिल उठते हैं, समान्य ज्ञान रूपी सितारे झंकृत हो जाते हैं और ज्ञान रूपी धारायें कल-कल-छल-छल बहने लगती हैं।

**श्री श्री यू. एस. मिश्रा, ग्राम-प्यारेपुर, पोस्ट मर्यादपुर, जिला-मउ, [मो. : 07379399552]**

## अतुलनीय पत्रिका

विज्ञान प्रगति का नवम्बर 2014 का अंक मिला! जो काफी सराहनीय रहा। इसमें आने वाला हर एक पृष्ठ काफी लाभप्रदायक होता है। हम सभी विज्ञान की छात्राओं के लिए तो यह एक गाइड लाइन की तरह है जो हमें विज्ञान में आगे बढ़ने की दिशा देती है। मैं बहुत दिनों से विज्ञान प्रगति पढ़ती आ रही हूँ। हमेशा मुझे नई-नई जानकारियां व खोज मिलती रहती हैं। कृपया कभी मेडम क्यूरी के बारे में पूर्ण जानकारी दें ताकि मैं भी उनके जैसा बनने का प्रयास करूँ। यह पत्रिका विज्ञान की छात्राओं के लिए ही नहीं बल्कि ग्रामीण किसानों के लिए भी लाभप्रदायक है क्योंकि इसमें हमेशा खेती, पेड़-पौधे एवं फल एवं उनके रोगों के बारे में पूर्ण जानकारी मिलती है। साथ ही प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वालों के लिए भी यह उत्साहवर्धक पत्रिका है। इसी के साथ विज्ञान प्रगति परिवार को मेरी ओर से नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं।

**सुश्री सोनी कुमारी श्रीवास्तव, सुपुत्री श्री धर्मेन्द्र श्रीवास्तव, खलका बाजार, चैनपुर, पोस्ट-चैनपुर, जिला-सीवान 841203 (बिहार)**

## मेरी प्रेरणास्रोत : विज्ञान पत्रिका

मैं बचपन से ही 'विज्ञान प्रगति' का पाठक रहा हूँ। मेरे चाचाजी और मामाजी इसे खरीदकर लाते थे तो कौतूहलवश मैं भी इसके पन्ने पलटने लगता था। उस समय इसमें छपने वाले कार्टून मुझे बहुत पसंद आते थे। धीरे-धीरे विज्ञान में मेरी रुचि बढ़ती गई और आज मैं जैवप्रौद्योगिकी में परास्नातक हूँ। मैं इसका पूरा श्रेय 'विज्ञान प्रगति' को ही देता हूँ। मैं अपने विद्यार्थियों को भी 'विज्ञान प्रगति' पढ़ने हेतु प्रेरित करता हूँ और चाहता हूँ कि लोगों में वैज्ञानिक चेतना का विकास हो तथा समाज में व्याप्त अंधविश्वासों तथा कुरीतियों का नाश हो। विज्ञान की प्रगति के साथ-साथ 'विज्ञान प्रगति' की प्रगति भी उत्तरोत्तर होती रहे एवं आने वाली पीढ़ियों को भी तथ्यपरक एवं वैज्ञानिक मार्गदर्शन प्राप्त होता रहे। आपसे विनम्र अनुरोध है कि भविष्य में बागवानी, आयुर्वेद, वैकल्पिक चिकित्सा, नवाचार एवं अंधविश्वास बनाम विज्ञान विशेषांक अवश्य निकालें।

नवम्बर 2014 का अंक प्राप्त हुआ। आमुख कथा 'फोरेंसिक साइंस' जैसे सारगर्भित एवं रोचक लेख हेतु डॉ. निधि दुबे जी का यह मानना कि अधिकांश अपराध सामान्य किस्म के होते हैं जो साधारण बुद्धि वाले अपराधियों द्वारा किए जाते हैं, अपने देश के संदर्भ में तो प्रासंगिक है परन्तु पाश्चात्य देशों में ऐसा नहीं है। वहाँ पर तकनीक के विकास के साथ-साथ अपराध करने के नित नए-नए तरीके ईजाद हो रहे हैं जो विज्ञान के लिए किसी खुली चुनौती से कम नहीं है। शुकदेव प्रसाद जी एवं देवकी नन्दन जी का मैं सदा से ही प्रशंसक रहा हूँ। उनका भी साधुवाद।

**श्री सुनील बहादुर कमल, द्वारा सन्नी फुटवियर, ग्राम व पोस्ट - टिकरा, जिला-कानपुर नगर 209217 (उ.प्र.)**
**[मो. : 08115499569, 09580666533;**
**ई-मेल : kamalsnehil007@gmail.com]**

## जनचेतना

मैंने विज्ञान प्रगति के नवम्बर, 2014 वाले अंक का गहन अध्ययन किया। उक्त अंक के साथ मेरे पास इसके कुल दो सौ अंक पूरे हो गए जो अपने आप में ऐतिहासिक है। मेरी समझ से विज्ञान प्रगति एक प्रकाश की किरण है, जिसकी रोशनी इतनी प्रखर है कि साथ हुए को भी जगा देती है। मैं लंबे समय से विज्ञान प्रगति पढ़ता आ रहा हूँ और इससे मेरे अंदर एक विशिष्ट प्रकार की वैज्ञानिक चेतना का विकास हुआ है। मैं समझता हूँ कि बचपन से ही इस पत्रिका से जुड़ जाना संभवतः मेरा बुद्धिमता एवं दूरदर्शिता पूर्ण कदम था। इस प्रकार की उच्च कोटि की पत्रिका का प्रकाशन करने वाले आप सभी बधाई के पात्र हैं। जन सामान्य तक विज्ञान की हर छोटी-बड़ी खबर पहुँचाने का संकल्प निश्चय ही सराहनीय है।

संपादक महोदय, एक सुधी पाठक होने के नाते मैं अपना एक विचार इस पत्रिका को देना चाहता हूँ कि

हमारी भारतीय संस्कृति में पहले भी विज्ञान को महत्ता दी जाती रही है। हमारे देश में आर्यभट, कनाद जैसे महान वैज्ञानिक भी हुए। परंतु संपादक महोदय आज यह एक सोचनीय बात है कि हमारे युवा अपनी पुरानी वैज्ञानिक संस्कृति को भूलते जा रहे हैं। अतः आपसे यह मेरी विनती है कि अपने अतीत के विज्ञानों को एक स्तंभ में समाकलित करते हुए प्रकाशित करें। यह हम युवाओं के लिए अत्यधिक उपयोगी साबित होगा एवं हम विश्व के अन्य देशों से यह कह सकेंगे कि हमारा अतीत देखो कितना सुंदर था।

**श्री नचिकेता वत्स, ग्राम व पोस्ट-लारी, थाना-कुथी, जिला-अखल, (बिहार)**
**[मो. : 09097157392]**

## वैज्ञानिक दृष्टिकोण

हमें विज्ञान प्रगति के इस अंक में अन्ततः अन्तरिक्ष के बारे में गहन जानकारी मिली है। 24 सितम्बर 2014 को मंगल यान प्रेक्षण का हम टीवी पर बेसब्री से इन्तजार कर रहे थे। मंगल यान (MOM) भारत की महान उपलब्धि है। इस प्रकार भारत मार्स कल्ब में शामिल हो गया। जीएसएलवी-डी-5 स्वदेशी क्रायोजेनिक्स इंजन द्वारा जी सैट-4 का प्रेक्षण कर अन्तरिक्ष के क्षेत्र में भारत की आत्मनिर्भरता का अग्रणी कदम था। फोरेंसिक साइंस द्व रा कैसे सूक्ष्मता से अपराधियों को पकड़ा जाता है, यह जानकर हमें आश्चर्य हुआ। आज के सामाजिक परिवेश में गाँवों में मूलभूत सुविधाओं के अभाव के बावजूद भी विज्ञान प्रगति सर्वसुलभता से उपलब्ध हो रही। इससे लोगों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित होगा जो देश के विकास के लिए अति आवश्यक है। पहले युद्ध धर्म विचारधाराओं के आधार पर लड़े जाते थे पर अब यह आर्थिक एवं तकनीकी प्रभुत्व हासिल करने के लिए होते हैं। इसमें विज्ञान ही देश का एकमात्र तारणहार होगा। वह दिन दूर नहीं जब विज्ञान प्रगति की वैज्ञानिक सोच से देश को महान वैज्ञानिक मिलेंगे।

**श्री चौधरी मनोहरलाल, सुपुत्र श्री मुलाराम कुकणा, ग्राम व पोस्ट-जोगेश्वर का कुआ, गरल, बाड़मेर 344001 (राजस्थान)**
**[मो. : 08890179606]**

## विज्ञान की श्रेष्ठतम पत्रिका

मैं एम. ए. प्रथम वर्ष का छात्र हूँ और नवम्बर 2011 से विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ। साथ ही मैं एकदिवसीय परीक्षाओं की तैयारी भी कर रहा हूँ। विज्ञान प्रगति मुझे मेरी तैयारी में अमूल्य योगदान देती है। नवम्बर 2014 के अंक में आमुख कथा-फोरेंसिक साइंस हमें विज्ञान की प्रगति का अहसास कराती है। इसके अलावा अजय मोहन पालीवाल द्वारा बैंक फ्रॉड्स के बारे में दी गई जानकारी हमें सावधान करती है। सवाल जब जब, जवाब तब तब मेरा पसंदीदा कॉलम है। अक्तूबर 2014 के अंक में आमुख कथा 'वाह क्या बात है : आपके मुंह में कीड़े-मकोड़े' में मनुष्य द्वारा कीड़े-मकोड़े खाने की बात आश्चर्यजनक लगी। इसके अलावा इबोला वायरस के बारे में दी गई जानकारी ज्ञानवर्द्धक है जो हमें सतर्क रहने का संदेश भी देती है। कैननबॉल ट्री के बारे में पढ़कर अच्छा लगा। मेरा आपसे अनुरोध है कि जिस तरह आप हर अंक में एक वैज्ञानिक के जीवन परिचय देते हैं उसी तरह हर अंक में एक वृक्ष अथवा वनस्पति के बारे में भी बतायें। अंत में विज्ञान प्रगति परिवार को विज्ञान से जुड़ी हर समस्या के समाधान के लिए कोटि-कोटि धन्यवाद।

**श्री अनिल कुमार यादव, सुपुत्र श्री इन्दर यादव, ग्राम-कान्धापुर, पोस्ट-सोनहिता, तहसील-मछलीशहर, जिला-जौनपुर 222 144 (उ.प्र.) [मो. : 09455550225, 09984746375; ई-मेल : kumaranil0225@gmail.com]**

## अतुल्य पत्रिका

मुझे सर्वप्रथम यह पत्रिका मेरे मित्र के माध्यम से प्राप्त हुई जो इस पत्रिका का नियमित पाठक है। पहली ही बार में यह पत्रिका मुझे बहुत आकर्षक लगी। इसके सभी कॉलम बेहद ज्ञानवर्धक एवं रुचिकर हैं। इसके चित्र भी बहुत मनमोहक हैं। विज्ञान प्रगति के सम्पादक परिवार को मेरी ओर से बहुत-बहुत बधाई।

**श्री प्रोनित सिंह, ग्राम-पूरा घिसन, तहसील-करहना, जिला-इलाहाबाद (उ.प्र.)**

## अनमोल उपहार

मैं विज्ञान प्रगति का विगत दो वर्षों से पाठक हूँ। यह पत्रिका भूखे को भोजन व प्यासे को पानी दिये जाने के समान है। मुझे अक्तूबर 2014 का अंक 'वाह क्या बात है : आपके मुँह में कीड़े मकोड़े' विशेषांक काफी अच्छा लगा। मुझे इसके सभी विशेषांकों का बेसब्री से इंतजार रहता है। विज्ञान प्रगति गाँव में रहने वाले छात्रों के लिए अनमोल उपहार है और मैं समझता हूँ कि जिज्ञासु छात्रों को विज्ञान प्रगति अवश्य पढ़नी चाहिए।

**श्री अमन कुमार सिंह, ग्राम-मोहम्मदाबाद, पोस्ट-कटहरा, जिला-इलाहाबाद (उ.प्र.)**
**[ई-मेल : ashwanikumasingh@gmail.com]**

## ज्ञानवर्द्धक पत्रिका

अक्तूबर 2014 का विज्ञान प्रगति का अंक प्राप्त हुआ जिसमें इबोला वायरस के बारे में प्रकाशित लेख में इबोला वायरस से होने वाले रोग के बारे में अतुलनीय जानकारी दी गई थी। वास्तव में इबोला तथा एचआईवी जैसे रोग मानव के लिए खतरा हैं जिनसे बचने के लिए जानकारी व जागरूकता बहुत जरूरी है। चित्रकथा में हाइड्रोजन बम के आविष्कारक एडवर्ड टेलर की कहानी बहुत ही दिलचस्प लगी। वास्तव में मानव सभ्यता दो न्यूक्लियर बमों के कहर को झेल चुकी है। परन्तु आज तो हाइड्रोजन तथा न्यूट्रॉन जैसे विनाशक बमों का आविष्कार हो चुका है तथा इस तरह के खतरनाक हथियार दुनिया के जंगबाजों की शोभा बड़ा रहे हैं किन्तु अगर तृतीय विश्व युद्ध हुआ तो जैसा कि एक प्रसिद्ध इतिहासकार ने कहा था कि तृतीय विश्वयुद्ध में सम्पूर्ण मानव सभ्यता ही नष्ट हो जायेगी तथा चतुर्थ विश्व युद्ध पत्थरों से लड़ा जायेगा। इसलिए मानव सभ्यता व पर्यावरण की रक्षा के लिए अधिक से अधिक कदम उठाने की आवश्यकता है तथा युद्ध से ज्यादा शांति के लिए प्रत्यन्त किये जाये साथ ही न्यूक्लियर पावर का उपयोग विनाश की जगह विकास के लिए किया जाए। इतने अच्छे प्रकाशन के लिए विज्ञान प्रगति के पूरे परिवार को हृदय से धन्यवाद!

**सुश्री उपासना त्रिपाठी, सुपुत्री श्री अरुण त्रिपाठी, ग्राम व पोस्ट-गुआवली, तहसील-निवाड़ी, जिला टीकमगढ़ 472447, (म.प्र.)**
**[ई-मेल : manjutri745@gmail.com]**

## अच्छी पत्रिका

मै कक्षा 11 (विज्ञान वर्ग) का छात्र हूँ। मुझे सर्वप्रथम विज्ञान प्रगति का अक्तूबर 2014 का 'वाह क्या बात है : आपके मुंह में कीड़े-मकोड़े', का अंक प्राप्त हुआ, जो मुझे बहुत पसंद आया। इससे प्रभावित होकर मैंने इसके पिछले अंकों का भी अध्ययन किया। विज्ञान प्रगति के सभी अंक मुझे बहुत अच्छे लगे। विज्ञान पाठक की ऐसी अनुपम पत्रिका हम तक पहुंचाने के लिए सम्पादक महोदय को धन्यवाद!

**श्री रोहित सिंह, ग्राम-पूरा घिसन, तहसील-करहना, जिला- इलाहाबाद (उ.प्र.)**

## प्रशंसनीय पत्रिका

मैं बी.एससी. द्वितीय वर्ष का छात्र हूँ और विज्ञान प्रगति पत्रिका विगत वर्ष से नियमित पढ़ता आ रहा हूँ। आपके हर अंक का विषय इतना पंसद आता है कि मुझे लगता है की इसी की तो मुझे आवश्यकता थी। मैं इसी पत्रिका को अपने ग्रामीण दोस्तों को देता हूँ और वे भी इसे चाव से पढ़ते हैं। उनके मन में भी विज्ञान की लहर दौड़ जाती है। यह पत्रिका हमारी जानकारी बढ़ाने के साथ-साथ रूढ़िवादियों को भी विज्ञान से उन्मुख कराती है। मुझे आपका पिछला अंक 'फोरेंसिंक साइंस पर विशेष अंक बहुत अच्छा लगा। इसमें छपे सभी लेख प्रशंसनीय हैं। मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप अपने आगामी अंकों में कम्प्यूटर साइंस को हिस्सा बनाएं जो कि आज के समय में एक महत्वपूर्ण विषय है। मैं तहे दिल से आपको धन्यवाद देता हूँ कि आपने ऐसे अमूल्य ज्ञान को हमारे साथ बाँटा।

श्री खेताराम सुथार, चौहटन, बाड़मेर (राजस्थान)
ख्मो. : 09549432473
ई-मेल : गिमजंतंउरंदहपक1212/हउंपसण्बवउ,